॥१॥ अथ पंच प्रभाव ॥

प्रवेशार्थ : प्रस्तुत रचना में सुन्दरदास ने रूपक और समास शैली का सहारा लेते हुए तीस दोहों में साधु-जीवन की पाँच दशाओं [-अवस्थाओं] का वर्णन किया है। आख्यान रूप में कथित इस रचना द्वारा **'भक्ति'** को परमात्सा की प्रिय पुत्री बताया है और **'माया'** को उसकी दासी। दासी को साथ लेकर बेटी अपना वर ढूंढ़ने निकलती है। अन्त में कोई वर अपने अनुकूल न मिलने पर, वह एकनिष्ठ सन्त-जन को ही अपना वर चुन लेती है। किन्तु, पिता के घर से आई दासी माया भी उसके साथ-साथ रहने लगती है। जो सन्त, निष्ठा के साथ [युवती-]भक्ति को ही अपनी परम प्रिया माने रहते हैं, वे सर्वोत्तम साधु-जन बताए गए हैं और जो दासी से सम्बन्ध रखने लग जाते हैं, वे कर्म-वृत्ति के अनुसार मध्यम, कनिष्ट और निकृष्ट बताए गए हैं। जो माया-दासी से ही संसर्ग बनाए रखते हैं और प्रिय भक्ति का तिरस्कार करते हैं, वे अधमाधम माने गए हैं। उक्त तीन अवस्थाएँ भक्त या भक्ति की हैं और चौथी लम्पट-प्रपंची संसारी की है। सन्त-मत के अनुरूप एक पाँचवीं अवस्था भी है जो 'ज्ञानी' की होती है। वह अपने चिन्तन से तुरीयावस्था में रहते हुए तुरीयातीत होने का प्रयत्न करता है। इसीलिए सुन्दरदास ने **'ज्ञानी सबको सीस'** कहकर उसे सर्वश्रेष्ठ बताया है। **'पंच प्रभाव'** का उक्त वर्णन एक अलग ही ढंग के रूपक के द्वारा प्रस्तुत हुआ है। यहाँ 'प्रभाव' का तात्पर्य 'अवस्था' विशेष से है। अर्थात् भक्ति और माया का जो अलग-अलग प्रभाव साधु [-सन्त-] जन पर पड़ता है, उससे जो अवस्था [-मानसिकता] बनती है, वही 'प्रभाव' की परिणति है। अतः 'पंच प्रभाव' से तात्पर्य पंच अवस्थाएँ अथवा लोगों के पाँच वर्गों से है। मूल पाठ इसप्रकार है :

दोहा : गुरु गोविन्द प्रणाम करि, सन्तनि की बलि जात।
सुन्दर सब कौ कान दे, सुनियहु अद्भुत बात ॥1॥

चूर्णिका : 1. गुरु गोबिन्द प्रणाम करि=गोविन्द रूप गुरु अथवा गुरु और गोविन्द [-परमात्मा]को प्रणाम कर के। बलि जात=बलिहारी जाता हूँ। कान दे=कान लगाकर, ध्यान से। अद्भुत बात=विचित्र-विलक्षण कथन।

Scanned with CamScanner

भक्ति सुता परब्रह्म की, आई इहिं संसार।
उत्तम वर ढूंढत फिरै, माया दासी लार ॥2॥
देषे जोगी जंगमा, संन्यासी अरु जैंन।
वै तौ मन मानैं नहीं, करते देषै फैंन ॥3॥
षट दरसन पुनि देषिया, देषे सोफी सेष।
तेऊ मन आये नहीं, देषे सारे भेष ॥4॥
तब सन्तनि कै ढिग गई, देषे शीतल रूप।
क्षमा दया धृति दीनता, सब गुन अजब अनूप ॥5॥
तिन के लक्षण देषि कैं, भक्ति सु बोली आप।
तुम ते मन राजी भयौ, मो सौं करहु मिलाप ॥6॥
भक्ति बिवाही सन्तजन, माया दासी संग।
जुवती सौं निश दिन रमैं, दासी सौं नहिं रंग ॥7॥
जुवती अति प्यारी लगी, तासौं बांधी प्रीति।
दासी कौं आदर नहीं, यह सन्तनि की रीति ॥8॥

---

2. भक्ति सुता परब्रह्म की=भक्ति परब्रह्म की प्रिय पुत्री है। आई इहिं संसार=इस संसार में उसका आगमन हुआ है। उत्तम वर=श्रेष्ठ दूल्हा, दुर्लभ पति। माया दासी लार=उसके साथ 'माया' नाम्नी दासी भी थी।
3. जोगी जंगमा=योगी और जंगम [-जीवधारी]। जैंन=जैन मत के अनुयायी। करते देषे फैंन=झागवत् अर्थात् मनमानी करते हुए अथवा दिखावटी आचरण करते देखे गए।
4. षट दरसन=षट्दर्शन—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा। सोफी-सेष=सूफ़ी और शेख़। भेष=साधु वेश।
5. ढिग गई=समीप जाकर देखा। शीतल रूप=शीतल-शान्त स्वभाव के। धृति=धीरज। दीनता=विनम्रता, दीनभाव। गुन अजब अनूप=सन्तों के सारे गुण [भक्ति प्रिया को-] अद्भुत और अनुपम लगे।
6. लक्षण=प्रकृति अथवा स्वभाव। तुम ते मन राजी भयौ=तुमसे [-सन्तों से] मन प्रसन्न [-राजी अनुरक्त] हुआ है। मोसौं करहु मिलाप=मुझ से [मेल-] सम्बन्ध स्थापित करो।
7. भक्ति बिवाही सन्त जन=भक्ति सन्तों की परिणीता हो गई। माया दासी संग=माया नामक दासी भी उसके साथ रहने लगी। जुवती=युवति भक्ति से। रमैं=रमण करते हैं। दासी सौं नहिं रंग=दासी के प्रति किञ्चित् भी [आसक्त-] अनुरक्त नहीं होते।
8. बांधी प्रीति=पूर्ण प्रेम का सम्बन्ध बनाया। दासी कौं आदर नहीं=पत्नी-प्रिया की निष्ठा में दासी-माया को महत्त्व नहीं। सन्तनि की रीति=सन्तों का स्वभाव। अर्थात् एकनिष्ठा अथवा पातिव्रत्य-भावना सन्तों की प्रकृति है।

Scanned with CamScanner

दासी घर कौ काम सब, करती डौलै साथ।
जुवती ऊंचे बंश की, जीमैं ताकै हाथ ॥9॥
दासी आज्ञा मैं रहै, जहं भेजै तहं जाइ।
ताकौ संग करै नहीं, बरतैं सहज सुभाइ ॥10॥
सो वह उत्तम जानिये, जाकै नीति बिचार।
सुन्दर बंदै लोक सब, यह उत्तम ब्यौहार ॥11॥
जो दासी कौं आदरै, जुवती सौं अति नेह।
दोऊ घर मांहीं रहैं, सुनहु बिचार सु येह ॥12॥
दासी कर जीमैं नहीं, बरतें नाना भाइ।
जाति मांहि नहिं काढिये, सब मिलि बैठै आइ ॥13॥
जुवती सौं रस रंग अति, दासी सौं नहिं प्यार।
सुन्दर सो मध्यस्थ है, जाकौ यह व्यवहार ॥14॥

---

9. दासी—सब=घर के अन्य सारे कामों केलिए दासी की स्थिति। करती डोलै=करती-फिरती है। जुवती ऊँचे वश=युवती 'भक्ति' ऊँचे कुल की होने के कारण। जीमैं ताके हाथ==सन्त उसी के हाथ से भोजन ग्रहण करते हैं। अर्थात् भक्ति-नियम के अनुरूप सन्तों की चर्या चलती है।
10. दासी आज्ञा मैं रहै=वशवर्तिनी होने के कारण दासी 'माया', मालिक: (अ०) 'भक्ति' की आज्ञा में रहती है। संग करै नहीं=वह उसके साथ नहीं रहती। अर्थात् भक्ति, माया को मुँह नहीं लगाती।
11. उत्तम जानिये=उस भक्त-सन्त को सर्वोत्तम मानना चाहिए। जाकै नीति बिचार=जिसके नीति-सिद्धान्त अनुरूप विचार-चर्या हो। बंदै लोक सब=सारा लोक वन्दना करता है। उत्तम ब्यौहार=उत्तम आचरण है।
12. दासी कौं आदरै=अपनी प्रिया भार्या को छोड़कर [परकीया-] दासी को आदर देता है, प्रतिष्ठा देता है। जुवती सौं नेह=युवति भक्ति से भी प्रेम रखता है। दोऊ घर माँहीं रहैं=भार्या भक्ति और दासी माया दोनों ही समानाधिकार से घर में रहती हैं।
13. दासी कर जीमैं नहीं=दासी के हाथ से [-हाथ का] भोजन साधु-जन ग्रहण नहीं करते। अपितु, भक्ति के हाथ का अर्थात् आत्म-तुष्टि केलिए, ज्ञान-वस्तु का भोग करते हैं। 'ज्ञान' आत्मा का भोजन माना गया है। बरतें नाना भाइ=अनेक भावों से प्रेरित होकर आचरण करते हैं। जाति मांहि नहिं काढिये=उसे जाति-मर्यादा की सीमा से बाहर नहीं निकालना चाहिए।
14. रस रंग अति=अत्यधिक रस-रमण। दासी=माया। मध्यस्थ=मध्यम कोटि के सन्त।

Scanned with CamScanner

जो दासी के रंग रच्यौ, मन राषै तिहिं पास।
जुवती सौं हलभल करै, कछु इक राषै आस ॥15॥
दासी कै संग डोलई, मन राष्यौ बिलंबाइ।
जुवती सौं कबहुंक मिलै, लष्ट पष्ट करि जाइ ॥16॥
कोउक बासौं मिलि चलै, कोउक राषै शंक।
सुन्दर यह सु कनिष्ट गति, अंक लगाई पंक ॥17॥
जो दासी सौं मिलि गयौ, अंग अंग लपटाइ।
जीमैं लागौ हाथ तिहिं, जुवती निकट न जाइ ॥18॥
सो तौ वृषली पति भयौ, कुलहि लगाई गारि।
जुवती उठि पीहरि गई, वाकौं माथै मारि ॥19॥
जाति मांहि बाहरि कियौ, जब उपजी औलादि।
तासौं कोऊ ना मिलै, जनम गमायौ बादि ॥20॥

15. दासी के रंग रच्यौ=दासी माया के साथ रंगरलियाँ करता है और मन भी वहीं आसक्त बनाए रखता हैं। जुबती सौं हलभल करै=युवति भक्ति से बाहरी सम्बन्ध दिखाता अथवा रखता है। राषै आस=आशा-कामना लगाए रखता है।
16. संग डोलई=साथ-साथ फिरता है। मन राष्यौ बिलंबाइ=मन विलम्बित करके, आसक्त करके रखा है। कबहुंक मिलै=कभी-कभी मिलता है। लष्ट पष्ट करि जाइ=लप्पं पष्टं अर्थात् हलके ढंग से खाना-पूर्ति भर करता है।
17. कोउकराषै शंक=कोई-कोई उससे शंका रखता है। कनिष्ट गति=[निम्न-] अधोगति है। अंक लगाई पंक[मुहा०]=अपनी गोद में ही कीचड़ लगा ली अर्थात् व्यर्थ ही कालिमा [-दोष] पोत ली है।
18. अंग अंग लपटाइ=अंग-अंग लिपटा कर अर्थात् माया में पूरी तरह डूब कर। जीमैं हाथ तिहिं=उसी के हाथ से जीमता है, उसके सहचार से आस्वाद लेता है।
19. वृपली पति भयौ=वह साधु न होकर मायावी धूर्त्त [-लम्पट] पति होकर जीता है। कुलहि-गारि=अपने कुल [-सन्त पंक्ति] को कलंक [-गाली]-कालिमा लगा लेता है। जुवती उठि पीहरि गई=ऐसे सन्त-पति से खिन्न होकर, युवति भक्ति, विरोध स्वरूप में उसे छोड़कर पीहर [-पिता, परमात्मा के पास] चली जाती है। अर्थात् ऐसे विषयी साधु-भक्त के पास भक्ति नहीं ठहरती, वहाँ तो माया [-छल-कपट] का दिखावा भर रह जाता है। माथे मारि=धक्का मारकर, मुँह पर मारकर।
20. जाति बाहरि कियौ=पतित [-पापी] कर्म करने के कारण उसे पंक्ति से बाहर कर दिया जाता है। अर्थात् वह भक्त या सन्त कोटि का नहीं रहता। औलादि=सन्तान। जनम गमायौ बादि=जन्म [-जीवन] व्यर्थ में गँवा देता है।

Scanned with CamScanner

कुल मरजादा सब तजी, तजी लोक की लाज।
सुन्दर ता की नीच गति, कीयौ बहुत अकाज ॥21॥
ऐसौ भेद बिचारि करि, भक्ति मांहि मन देउ।
माया सौं मिलि जाहु जिनि, इहै सीष सुनि लेउ ॥22॥
सत्व रजो तम तीनि गुन, तिनि कौ यह व्यौहार।
उत्तम मध्यम अधम अध, कहे सु चारि प्रकार ॥23॥
तीन भक्ति चौथौ जगत, फेर सार कछु नांहि।
तीन भजैं भगवंत कौं, चौथौ भव जल मांहि ॥24॥
ज्ञानी इन चार्‌यौं परै, ताके चिन्ह न कोइ।
ना सो भक्त न जगत है, बंध मुक्त नहिं सोइ ॥25॥
ना बहु रक्त विरक्त है, ना बहु भीत अभीत।
तुरिया मैं बरतै सदा, निश्चय तुरियातीत ॥26॥

---

21. कुल मरजादा=वंश-मर्यादा, सन्तों की श्रेष्ठ परम्परा। तजी=त्याग दी। लोक की लाज=लोक मर्यादा, लोक लाज। ता की=उसकी नीच गति=उसकी अधोगामी [-निकृष्ट]-गति[-चर्या, दशा] हो जाती है। अकाज=दोष पूर्ण कर्म, हानिकारक कार्य।
22. भक्ति मांहि मन देउ=भक्ति [-युवति] में मन लगाओ। जिनि=नहीं, मत। इहै सीष=यही शिक्षा है।
23. सत्व रजो तम तीनि गुन=उक्त उत्तम-मध्यम-अधम ये तीन प्रकार की भक्ति तीन गुणों [सत्त्व-रज-तम] की अतिशयता-न्यूनता के आधार पर निर्धारित हैं। चारि प्रकार=सत्त्व-रज-तम के आधार पर तो उत्तम-मध्यम-निम्न [-अधम] ये तीन प्रकार हुए। चौथा प्रकार अधमाधम अर्थात् निकृष्ट कोटि की भक्ति है, जो लम्पट [-धूर्त्त] के द्वारा की जाती है।
24. चौथौ जगत=तीन प्रकार की भक्ति के अतिरिक्त चौथी भक्ति लम्पट संसारी की है। तीन भजैं भगवंत कौं=तीन प्रकार की भक्ति का अवलम्ब करने वाले किसी-न-किसी प्रकार से भगवान् के प्रति भावना को अर्पित किए रहते हैं। चौथौ=चौथा प्रकार भवजल [-संसार-सागर] में डुबोने वाला है।
25. ज्ञानी इन चार्‌यौं परै=ज्ञानी साधक की भक्ति उक्त चारों प्रकार की भक्ति-साधना से ऊपर [-भिन्न प्रकार] की है। चिन्ह=चिह्न, लक्षण। ना सो भक्त न जगत=ज्ञानी की दशा भक्त और संसारी दोनों से ही भिन्न है। बंध मुक्त नहिं=वह बन्धन एवं मोक्ष दोनों से परे रहता है।
26. ना बहु रक्त विरक्त है=वह आसक्त और विरक्त इन दोनों ही विशेषणों की सीमा में नहीं आता। भीत अभीत ना=भयभीत और निर्भय ये दोनों लक्षण उसे नहीं समेट पाते। तुरिया मैं बरतै=तुरिया अवस्था में स्थित रहता है।

Scanned with CamScanner

जो कोउ पूछै फेरि करि, कैसैं तुरियातीत।
क्षुधा तृषा व्यापै सदा, लगै घाम अरु शीत ॥27॥
याकौ उत्तर अब कहौं, सुनि लीजै मन लाइ।
शीत उष्ण वाकौं नहीं, ना बहु पिवै न षाइ ॥28॥
देह प्राण कौ धर्म यह, शीत उष्ण क्षुत् प्यास।
ज्ञानी सदा अलिप्त है, ज्यौं अलिप्त आकास ॥29॥
भक्ति भक्त माया जगत, ज्ञानी सब कौ सीस।
पंच प्रभाव वषानिया, सुन्दर दोहा तीस ॥30॥

॥ समाप्तोऽयं पंच प्रभावग्रन्थः ॥9॥

---

27. तुरियातीत=तुरीय चतुर्थ अवस्था है। 'तुरियातीत' दशा तुरिया अवस्था से भी परे की अवस्था है। व्यापै सदा=सदा व्याप्त रहती है। घाम-शीत=गर्मी-सर्दी।
28. याकौ=इसका। मन लाइ=मन लगा कर। ना बहु पिवै न षाइ=न तो वह पीता है और न खाता है।
29. देह प्राण कौ धर्म···प्यास=गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास ये शरीर-प्राण के अनुभव में आने वाले क्रिया-धर्म हैं। ज्ञानी सदा अलिप्त है=ज्ञानी उक्त सुख-दुखात्मक अर्थात् द्वन्द्वात्मक क्रिया-धर्मों से, अनासक्त रहने के कारण, अलिप्त रहता है। गीता में प्रमाण है—'गुणा गुणेषु वर्तन्ते इति मत्वा न सज्जते'[-3/28]तथा 'ज्ञानी त्वामैव मे मतम् [-7/18]।
30. भक्ति भक्त=युवति भक्ति तो भक्त-सन्त केलिए है। माया जगत=माया माया-लिप्त संसारी केलिए। ज्ञानी सब कौ सीस=माया विकारों से परे होने के कारण ज्ञानी की दशा सर्वोपरि है। पंच प्रभाव=भक्ति-माया और ज्ञान के प्रभाव से मनुष्य की जैसी गुण-वृत्ति-दशा होती है वह—उत्तम, मध्यम, अधम और अधमाधम कोटि है। किन्तु, ज्ञानी की **'तुरियातीत'** यह पांचवीं दशा है। यही पाँच प्रकार या पंच प्रभाव हैं।

Scanned with CamScanner